नया जन्म

(शिब्बू का घर। शिब्बू और पंडित बातें कर रहे हैं।)

शिब्बू : पंडित... जरा एक बात तो बता कि आदमी अगर बिरादरी से बाहर हो जाए, तो भला वो जी सकता है ?

पंडित : जी तो नहीं सकता, पर वह यह भी तो कर सकता है कि अपनी एक दूसरी बिरादरी बना ले।

शिब्बू : बिरादरी तो वह होती है जिसमें आदमी जन्म लेता है।

पंडित : नहीं, एक जैसी सोच वाले आदमी भी अपनी बिरादरी बना सकते हैं, बस आदमी ज़रा ताकतवर होना चाहिए।

शिब्बू : यह बात तो तूने ठीक कही है... तू ताकतवर था तो तेरी क्या किसी ने टांग तोड़ दी... वाह भई पंडित, तूने इश्क किया तो ठोंककर किया... कहते हैं, पंडित ने झींवरी को फंसा लिया।

पंडित : नहीं शिब्बू, यह बात सही नहीं है।

शिब्बू : फिर सही क्या है ?

पंडित : सही बात यह है कि झींवरी ने पंडित को फंसा लिया... खैर, अब असली बात पर आ... अपना प्रीतम सिंह सरपंच, कल चौपाल में बातें कर रहा था कि शिब्बू में अकड़ बहुत आ गई है... कई-कई संदेश भेजो तो कहीं आता है।

शिब्बू : मेरी तो कैरी अकड़ है, ये सब तो तेरे भतीजे की जिद है, कहता है, पापा, अब लागपना नहीं करने देना।

पंडित : तो सही कहता है बिल्लू, अब तो रब्ब की दया से वह बलदेव सिंह माहला बन गया है, मंडी बोर्ड का इंस्पेक्टर।

शिब्बू : भई, अगर मैं गांव का काम करना बंद कर दूंगा तो मेरी जात तो नहीं बदल जाएगी, रहना तो सांसी ही है, जो रब्ब ने बना दिया। बाकी रही बात मंडी बोर्ड की इंस्पेक्टरी की, वो चढ़ गई है उसके दिमाग

में, कहता है, पापा, तेरे 'लागी' वाला काम जारी रखने से मेरी बेइज्जती होती है, अब पंडित, उससे कोई पूछे उसे यह इंस्पेक्टरी मिली कहां से, बड़े-बड़े सरदारों के लड़के वहां उम्मीदवार थे, रंधावा, गिल, शेरगिल, काहलों, दुसांझ, संधू, इंस्पेक्टरी तो उसे इसलिए मिल गई कि बीस में चार सीटें छोटी जातियों के लिए रिजर्व थीं। क्या कहते हैं उसे?

पंडित : अनुसूचित जातियों के लिए।

शिब्बू : अपने बिल्लू की बारी तो आई इसलिए कि वह मेरा बिल्लू है- सांसियों का बिल्लू है, शिब्बू का बिल्लू है, शिब्बू, जिसका बाप था लब्भू, लब्भू के बाप का नाम था रूड़ा... उसके बाप का नाम भाना, वो थे सात भाई, तो वह इंस्पेक्टर इसलिए बना कि वह हमारे बुजुर्गों के खानदान में से है और अब वह अपने इसी खानदान को ही नकारता है।

पंडित : वो कैसे?

शिब्बू : कहता है मैं बिल्लू वल्द शिब्बू नहीं हूं।

पंडित : और क्या है?

शिब्बू : कहता है मैं बलदेव सिंह पुत्र नसीब सिंह हूं।

पंडित : *(शरारत में)* क्यों, वो तेरा पुत्र नहीं है?

शिब्बू : क्यों मेरा पुत्र क्यों नहीं?

पंडित : तो भला यह नसीब सिंह कौन है?

शिब्बू : मैं, और कौन? राशनकार्ड में मेरा नाम नसीब सिंह पुत्र लाभ सिंह है, बेशक गांवों वालों के लिए शिब्बू पुत्र लब्भू ही हूं।

पंडित : मुझे तो फिक्र हो गया था कि बिल्लू की मां ने बिल्लू के वक़्त कहीं और ही सुर न मिला ली हो।

शिब्बू : ओए कंजर तेरी भाभी, तेरी झींवरी जैसी नहीं है, शिब्बू की मेजो है, वैसे बिल्लू के ठाठ देखकर कई बार मुझे शक सा होता है कि बिल्लू अपना तो है ना?

पंडित : कहे तो भाभी से पूछ लूं, यह शक सा निकल ही जाए।

शिब्बू : तू तो चुप ही रह, बड़ा आया है मातबर, शरारत से बाज नहीं आता, 'कंजर' कहीं का। तो बात अब ऐसी है कि बिल्लू जब से इंस्पेक्टर बना है वह अपनी बिरादरी से बाहर चला गया है और मुझे भी यही कहता है।

पंडित : उसे कह दे कि हमारी बिरादरी में आ मिले, जहां आदमी भूल जाता है कि वह ब्राह्मण है, क्षत्रिय है, झींवर है, नाई है, सांसी है... बस आदमी हो जाता है और परखा जाता है कि उसका आचरण कैसा है।

शिब्बू : पंडित, आचरण तो हम भी बुरा नहीं करते, सारी उम्र लोगों की सेवा की, किसी का दिल नहीं दुखाया। ख़याल था कि जिस तरह पहले इतनी उम्र निकल गई है बाकी भी निकल जाएगी, पर इस बिल्लू ने नया संकट खड़ा कर दिया है, कहता है पापा को बेगार नहीं करने देनी। *(मेजो चाय लेकर आती है।)*

पंडित : अपनी मेजो क्या कहती है ?

शिब्बू : ये भी अपने पुत्तर के साथ है, निकम्मी, अपना मुंह नहीं देखती। उम्रभर जट्टों के टुकड़ों पर पलती, मरती रही है। अब सरदारनी बन-बन बैठती है।

पंडित : तेरे साथ बंधी तो यही कुछ मिलना था।

शिब्बू : *(चाय का घूंट भरकर)* पंडित, जब तूने उस झींवरी से इश्कपेचा लड़ाया था तो तुझे यह नहीं दिखी ? तेरी झींवरी से बुरी तो नहीं थी।

मेजो : देख लो, कैसी बातें आने लगी हैं।

पंडित : अरे कंजर, भाभी तो है तख्त पर बैठाने लायक, तेरे साथ बंध गई तो बेगार करनी पड़ गई, वैसे तो जैसी कि कहावत है 'गरीब की जोरू सबकी भाभी' ...क्यों गुरमेज कौर, मैंने कुछ गलत कहा ?

मेजो : भइया, तू तो हमें मेजो और शिब्बू ही रहने दे, जब से गुरमेज कौर और नसीब सिंह बने हैं तब से संकट आ पड़ा है। इन बाप-बेटों के झगड़े से मैं तो तंग आ गई हूं। बेटा कहता है, पापा नसीब सिंह बनकर रहे, पर यह कहता है कि मैं रहूंगा तो शिब्बू बनकर ही रहूंगा... नहीं तो मर जाऊंगा।

पंडित : तू फिक्र मत कर, इसे हम अपनी बिरादरी में मिला लेंगे, अगर कहे तो अपनी तरफ से गांव का पंच भी चुन लेंगे।

मेजो : ना भइया, यह मत करना, पहले ही सरपंच प्रीतम सिंह ने वैर बांध रखा है।

पंडित : क्यों ?

मेजो : संक्रांति के दिन बिल्लू के कहने पर गुरुद्वारा के भाई ने कहा कि सरदार नसीब सिंह माहला सवा पांच लाख दमड़ा गुरु की हुजूरी में भेंट करते हैं, इससे प्रीतम सिंह चिढ़ गया, भरी सभा में पूछने लगा

कि यह सरदार नसीब सिंह माहला कौन हुआ ? बिल्लू ने कहा, मेरा पाए है, तो बस नाक-भौं सिकुड़ गई।

पंडित : फिर तो उसे सवा पांच लाख दमड़ों की जगह सवा दस लाख दमड़ों की अरदास करवानी पड़ी होगी।

मेजो : और क्या भइया, ये बड़े आदमी भला कब चाहते हैं कि कोई छोटा आदमी ऊंचा उठे।

पंडित : इनके चाहने न चाहने से दुनिया थोड़े ही चलती है, हम अपनी बिरादरी बनाकर बताएंगे।

शिब्बू : खैर, पंडित, यह बता कैसे आया है ?

पंडित : अरे शिब्बू, एक संदेश भेजना था तेरी भाभी के पास।

मेजो : कहां गई प्रसिन्नी ?

पंडित : रूठकर पीहर चली गई।

शिब्बू : ना भई पंडित, हमने संदेशे लेने-देने वाले काम छोड़ दिए हैं, बिल्लू यही कहता है 'लागपना' नहीं करना है।

पंडित : अरे कंजर, यह लागपना नहीं है, भाई की मदद करने की बात है।

मेजो : पर भइया, यह काम खुद के करने का है, संदेशों से काम नहीं चलता है।

शिब्बू : वह रूठकर गई ही इसलिए है कि पंडित खुद लेने आए, हम तो सारी उम्र तरसते रहे कि हमारी मेजो भी रूठकर जाए और हम मनाने जाएं, पर पंडित फिक्र मत कर, तेरा काम हम कर देंगे। जाकर ऐसा नक्शा खींचेंगे कि वह दौड़ी चली आएगी, जिसे कहते हैं, 'कच्चे धागे से बंधी चली आए मेरी सरकार', पर एक बात है, अपने बिल्लू को पता न लगे, वह फिर हुड़दंग मचा देगा।

पंडित : क्या कहेगा ?

शिब्बू : कहूंगा, पंडित मरने वाला है, न गई तो मरे का मुंह देखेगी, और वह भागी आएगी... तैयार तो वह पहले से ही बैठी होगी कि कोई आए, रूठने का मज़ा भी तो इसी में है कि कोई मनाने आए।

मेजो : ये अपनी बातें सुना रहा है।

पंडित : वो कैसे ?

मेजो : बिल्लू से झगड़कर जा बैठा गुरुद्वारे में, फिर एड़ियां उठा-उठाकर देखे कि कोई लेने आ जाए। बिल्लू दो बार चोरी-चुपके देख आया। शाम को कहने लगा- मां, ले आ जाकर, चाय का वक़्त हो गया है,

पापा का नशा टूट रहा होगा... गुरुद्वारे में गई तो पहले से ही तैयार बैठा था।

शिब्बू : है कमज़ात कहीं की, बातें तो देखो कैसे बनाती है। अच्छा, तू फिक्र मत कर पंडित, तेरा काम अभी जाकर करते हैं... पर एक बार फिर कह देता हूं, बिल्लू को कुछ पता न चले।

पंडित : *(जाता हुआ)* कह जो दिया, नहीं बताऊंगा बिल्लू को।

शिब्बू : देख ले मेजो, बिल्लू कहता नहीं थकता कि पंडित जैसा समझदार आदमी गांव में कोई दूसरा नहीं है, और इसकी समझदारी का हाल यह है कि पत्नी रूठकर भाग गई है। तुम्हें हमने कभी रूठने दिया है? ला अब रोटी दे, खाकर जाएं पंडित के काम पर।

मेजो : अभी तो कह रहा था कि भूख नहीं है।

शिब्बू : खाली बैठे भूख थोड़े ही लगती है, अब पंडित ने हमें वह काम सौंपा है जो पीढ़ियों से चला आ रहा है, संदेश देने का, किसी की बहन-बेटी को लाना हो, किसी को छोड़कर आना हो। प्रसिन्नी भाभी को लेकर तो आऊंगा, पर पंडित को लाग नहीं छोड़ने का।

मेजो : हां, आदतें कहां छूटती हैं।

शिब्बू : वारिस शाह ना आदतां जांदियां ने, भावें कट्टिए पोरियां पोरियां जी।

मेजो : अच्छा, आ फिर चौके में बैठकर ही खा ले, मुद्दतों बाद तुझे चाव चढ़ा है।

(दोनों मंच से बाहर जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

(बिल्लू अंदर अखबार पढ़ रहा है। शिब्बू एक कमीज़ उठाए ऊपर नीचे देख रहा है।)

बिल्लू : बापू, यह कमीज़ कहां से उठा लाया है? मैं नहीं पहनने दूंगा यह कमीज़।

शिब्बू : अरे क्या हुआ है इस कमीज़ को? टेरालीन की है। धुल भी जल्दी जाती है और सूख भी जल्दी जाती है, तेरी मां का काम आसान हो जाता है।

मेजो : तुम अपनी बात करो, मैं सुखी रहूं, दुखी रहूं, पहले तो तुम्हें कभी याद नहीं आया।

शिब्बू : तू तो हर वक़्त लाठी उठाए रहती है, बात करो तो काटने को दौड़ती है, भला इस कमीज़ में बुराई क्या है?

बिल्लू : यह कमीज़ उस प्रीतम सिंह की उतारी हुई है, और मैं तुम्हें सरदारों की उतरन नहीं पहनने दूंगा।

शिब्बू : अरे हद हो गई है, तुम कंजरों के नखरे ही नहीं संभाले जाते। तुम पटियाला वाले राजा की औलाद कहां से पैदा हो गए, मैंने गांव वालों से नाता थोड़े ही तोड़ लेना है।

बिल्लू : क्या है तुम्हारा गांव से नाता? बस, बेगार ढोना?

शिब्बू : हमारी तीन पीढ़ियों का गांव से नाता है, बाहर से गांव उजड़कर आया, हम भी साथ आए। हम सांसी हैं, और हमारा काम ही बेगार कमाना है। इस काम का अपना ही मज़ा है। खुशी-ग़मी के संदेशे लाने और देने। गांव में शादी-ब्याह या दूसरे मौकों पर बिस्तर इकट्ठे करने और लोगों के वक़्त-बेवक़्त काम आना, किसी के काम आना कोई बुरी बात है क्या?

बिल्लू : और उसके बदले तुम्हें देते हैं उतरी हुई कमीज़ें?

शिब्बू : अरे यह तो भाइयों वाली सांझ है, प्रीतम सिंह कहने लगा, ले भई शिब्बू, थोड़े दिन मैंने पहन ली अब तू पहन ले।

बिल्लू : प्रीतम सिंह सरदार ने यह तो नहीं कहा कि ले शिब्बू, नई कमीज़ सिलाई है, पहले कुछ दिन तू पहन ले, फिर मैं पहन लूंगा।

शिब्बू : अरे बड़े आदमी भला ऐसा क्यों करेंगे?

मेजो : और यही तो लड़का कहता है, तू बंदा बन और आराम से घर बैठ- अच्छा भला घर में खाने-पीने को है।

शिब्बू : आराम से कैसे बैठ जाऊं- आदमी की हड्डियों में पानी पड़ जाता है।

बिल्लू : काम तो और भी बहुत हो सकते हैं पर नीयत नहीं जाती नीच कौमों वाली।

शिब्बू : क्या कहा, नीच कौमों वाली नीयत... अरे गंदी औलाद तू नहीं नीच कौम का... अगर इतनी ही बड़ी नाक थी तो उस वक़्त ही संधावालिये सरदार के घर में पैदा हो जाना था, मेरा घर क्यों गंदा किया नीच जात वाले ने?

मेजो : बस हो गए शुरू।

शिब्बू : शुरू न होऊं... अब इसने भी नीच जात का ताना दे दिया। हमने अपने बापू से कभी यह कहा- भाई जब कम्बख्त रब्ब ने लेख ही लब्भू के घर में लिखा था तो मैं बनारसी आढ़ती के घर कैसे पैदा हो जाता?

बिल्लू : लो, अब बनारसी आढ़ती को घुसेड़ लिया, तुम्हारी यही सोच तो तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ती, और पापा, मेरी और एक बात दो टूक सुन ले, ना तो इस घर में किसी का उतारा कपड़ा आएगा, न ही 'लागपने' की मिठाई। यह जो रोटी और हलवा प्रीतम सिंह के घर से लाए हो, इसे भी वापिस कर दो या काले कुत्ते को डाल दो। घर में नहीं खाना किसी ने भी... अगर हलवा खाना इतना ही ज़रूरी है तो वहीं खा आया करो, जहान भर की जूठन घर में उठा लाते हैं।

शिब्बू : अरी मेजो, तूने खानी है कि नहीं ?

मेजो : कह जो दिया, घर में कोई नहीं खाएगा।

शिब्बू : ओए गंदी औलाद, तू जूठन खाकर ही बड़ा हुआ है।

बिल्लू : पापा, जो जूठन खानी थी, खा ली... अब खाएंगे बेशक सूखी, पर खाएंगे 'सुच्ची'। और पापा, अब यह गांव का काम भी छोड़ दे, सारी उम्र 'जट्टों' की बेगार करते निकल गई, अब तो चार दिन आराम से बैठ, बेकार में ही ऐरे गैरे को 'सरदार जी' 'सरदार जी' करता फिरता है, जट्टों के लड़के, जिन्हें नाक पोंछने की भी तमीज नहीं है, वे भी मां को भाभी और तुम्हें शिब्बू काणा कहकर आवाज़ लगाते हैं और यह मेरी बर्दाश्त से बाहर है।

शिब्बू : काम छोड़कर जिऊंगा कैसे, कोई कहे- शिब्बू, ब्याह का निमंत्रण देना है, गांव में अमुक जगह भैंस छोड़कर आनी है, लड़के की मिठाई देकर आनी है, और मैं ना कर दूं ? कैसे कह दूं कि अब मुझे यह बेगार नहीं करनी।

बिल्लू : हां, कह दो अपना काम खुद करो नहीं तो कोई दूसरा टहलुआ ले आओ।

शिब्बू : दूसरा आया तो मारे शर्म के अपनी नाक नहीं कट जाएगी ?

मेजो : नाक क्यों कट जाएगी, यह कौन सी गुरुद्वारा में अरदास करने वाली बात है कि भाईजी के रहते कोई दूसरा अरदास करदे तो भाईजी की नाक कट जाएगी।

बिल्लू : बात तो बेगार छोड़ने की है, घटिया काम छोड़ने से नाक नहीं कटती।

शिब्बू : घटिया काम कैसे है ? यह तो सेवा है, और सेवा का काम घटिया नहीं होता, गुरु महाराज ने भी यही कहा है।

बिल्लू : गुरु महाराज ने यह नहीं कहा कि झुककर बड़ों की सेवा करो, अगर

बात सेवा वाली ही है तो फिर सरपंच प्रीतम सिंह से कहो, जो 'गातरा' पहनकर बड़ा समाजसेवक बना फिरता है, उससे कहो कि मैं उसे दोगुने पैसे दूंगा, अगर वह हमारी बेगार करे तो।

शिब्बू : वह बेगार क्यों करे? ऊपर वाले ने हर एक के जिम्मे काम लगाए हैं।

बिल्लू : बस, जब कोई और बात कहने को नहीं रहती तो बीच में ऊपर वाले को घसीट लो, ऊपर वाले ने तो ऊंच-नीच नहीं बनाए हैं।

शिब्बू : तो अब तू सरदारों की बराबरी करेगा?

बिल्लू : बराबरी करूं या न करूं, अपने आपको नीचा नहीं कहूंगा और आपको उस प्रीतम सिंह की बेगार नहीं करने दूंगा।

शिब्बू : अरे गज़ब हो गया... ये वही प्रीतम सिंह है जिसने लड़की की शादी के वक़्त झट से चार हजार रुपए निकालकर दे दिए थे।

बिल्लू : और ब्याज भी तो पांच रुपए सैंकड़ा लगाया था... मुफ्त में नहीं दे दिया था तुझ कलेरां वाले संत को।

शिब्बू : हुंह, ब्याज न ले तो दान करता रहे, उसकी हक़-हलाल की कमाई है।

बिल्लू : हां, उसकी हक़-हलाल की कमाई किसी से छुपी हुई है? ब्लैक में अफीम बेचना, एक ही तो काम रह गया है हक़ हलाल का।

शिब्बू : ओए गंदी औलाद, वो जो भी करते हैं अपने दम पर करते हैं।

मेजो : क्यों झगड़ते हो, आखिर यह प्रीतम सिंह अपना लगता क्या है?

शिब्बू : लगता है अपना यजमान, तीन पुश्तों से हमारी सांझ है, कोई मखौल है...मेरा बाप लभू इसके बापू नछत्तर सिंह की बेगार करता था। मेरा दादा, क्या नाम था उसका, भूल गया... इसके दादा दर्शन सिंह की बेगार करता था, सरदार दर्शन सिंह का पिता फूला सिंह महाराजा रणजीत सिंह की फौज में था और फूला सिंह का पिता गंडा सिंह महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में खास दरबारी था।

बिल्लू : देखा मां, अपने दादा का नाम भूल जाते हैं, प्रीतम सिंह की पांच पीढ़ियों के नाम याद किए हुए हैं।

शिब्बू : रे टहलुए को यजमानों के खानदान के जितने ज़्यादा नाम याद होंगे, कसीदे उतने ही अच्छे पढ़े जा सकेंगे। इनाम भी ज़्यादा मिलेगा। प्रीतम सिंह ने मेरे साथ कभी भेदभाव नहीं किया तो मैं क्यों करूं?

बिल्लू : चलो अच्छा है, अगर उससे इतना ही प्यार है तो वहीं जाकर रह लो, यहां ऐसी-तैसी करवाने आते हो?

शिब्बू : ओए, तू मुझे घर से निकालेगा? मेजो कम्बख्त, तू और पैदा कर

ऐसा बदकार, इसे पढ़ा-लिखा कर बड़ा इसलिए किया था कि भई बाप को ही घर से निकाल दे।

मेजो : अब बाप-बेटा ही फैसला करो, मुझ पर गुस्सा क्यों निकालते हो।

शिब्बू : नहीं करता गुस्सा किसी पर, मैं ही चला जाता हूं कहीं, इस नवाब की नज़र में मेरी कोई कद्र ही नहीं रही, जैसे मैं घर का अंग ही न होऊं। कभी नवाब को मेरे मैले कपड़े अच्छे नहीं लगते, कभी मेरे पाले दो कुत्ते फालतू की गंदगी लगते हैं, इसे क्या पता है कि हमारे बड़े-बुजुर्ग शिकार के शौकीन थे, और ये कुत्ते पालकर मैं अपने पूर्वजों की रवायत को ही आगे बढ़ा रहा हूं, अपने पूर्वजों की रवायत को आगे बढ़ाना हर आदमी फर्ज़ बनता है।

बिल्लू : हां, दुनिया बेशक चांद पर पहुंच जाए, तुम अपनी रवायतों से चिपके रहना।

मेजो : अरे बेटा, तू इससे क्यों झगड़ता है, ये कहां समझेगा। बातों में तो इसने सारी उम्र किसी से मार नहीं खाई।

शिब्बू : हां... तू भी इसी के पक्ष की ही बात करेगी-कम्बख्त, पछताएगी, अगर तू भी आंखों पर हाथ रखकर न रोए तो मुझे लभू का पुत्तर न कहना, इस कंजर का ब्याह हो लेने दे, अगर बहू तेरी चोटी खींचकर हाथ में न पकड़ाए तो कहना।

मेजो : बिल्लू के पापा, क्यों आठों पहर भुनता रहता है और लोगों के लिए फालतू का तमाशा, तू खुद सोच, अगर रब्ब ने सबकुछ दिया है तो बेगार करके टांगें क्यों तुड़वानी हैं, आराम से घर बैठ, फिर भी बिल्लू तुझे रोटी ना दे, तो कहना।

शिब्बू : ओए रब्ब न करे इसकी रोटियों का मोहताज बनूं। जब तक ये हाथ-पैर हैं अपने लिए कमा सकता हूं, इसे भी खिला सकता हूं।

बिल्लू : जा बाबा, माफ करो, जो मर्ज़ी आए करो।

शिब्बू : हाथ क्यों जोड़ता है- जा रहा हूं, वापिस नहीं आऊंगा।
(जाने के लिए मुड़ता है।)

मेजो : पता तो चले कहां जा रहे हो?

शिब्बू : गुरुद्वारा में जा रहा हूं, मुझे लेने मत आना, *(मुड़कर)* रोकोगे, तो भी नहीं रुकूंगा, *(फिर मुड़कर)* एक बार गया तो वापिस नहीं आऊंगा, *(फिर मुड़कर)* सारा गांव साथ लेकर आओगे तो भी वापिस नहीं आऊंगा।

मेजो : बेटा, रोक अपने पापा को।

बिल्लू : जा लेने दे, अपने आप ठंडा हो जाएगा।

शिब्बू : मैं ठंडा नहीं होऊंगा, हाथ भी जोड़ोगे तो भी वापिस नहीं आऊंगा। *(जाता है।)*

तीसरा दृश्य

(गांव की चौपाल में प्रीतम सिंह और पंडित बातें कर रहे हैं।)

प्रीतम सिंह : पंडित, अपने इस शिब्बू को क्या हुआ है ? बड़ी 'अवातवा' बातें करने लगा है ?

पंडित : सरपंच, आदमी जब अपने अतीत से पीछा छुड़ाना चाहता हो और भविष्य नजर न आए तो आदमी कमज़ोर पड़ ही जाता है और शिब्बू अब कमजोर पड़ गया है।

प्रीतम सिंह : कहते हैं बिल्लू से उसका हमेशा महाभारत लगा रहता है।

पंडित : वो तो सरपंच तेरी वजह से लगा रहता है।

प्रीतम सिंह : मेरी वजह से क्यों ?

पंडित : तुम्हें पता है कि बिल्लू अब नहीं चाहता कि उसका पापा बेगार करे, पर तू उसे बार-बार बुला भेजता है, तुम्हें वह ना नहीं कर सकता और घर में कलेश हो जाता है।

प्रीतम सिंह : बिल्लू ने चार पैसे क्या कमाने शुरू किए अकड़ ही बहुत गया है, जात ही भूल गया है।

पंडित : क्यों न अकड़े, आदमी अगर सम्मान से जीना चाहता है, तो क्यों न जिए, बिल्लू की बात कोई अनोखी नहीं, अब तू भी प्रीतम सिंह सरदार प्रीतम सिंह इसी कारण है कि तेरे पास पैसा है, नहीं तो लोग तुम्हें भी प्रीतू जट्ट कहकर बुलाते।

प्रीतम सिंह : आदमी जिस घर में पैदा होता है, उसी का रहता है, बिल्लू बेशक सरदार बलदेव सिंह माहला का बोर्ड घर के आगे टांग ले, नए मकान के आगे 'माहला कुटीर' लिख ले, पर रहेगा तो सांसियों का लड़का ही।

पंडित : यह भी तेरा भ्रम है सरपंच, बिल्लू की शादी हो लेने दे, बिल्लू के बच्चे भी जब नई वर्दी पहन और पीठ पर बैग टांग कर इंगलिश मीडियम वाले मॉडल स्कूल में दाखिल हुए तो किस मुए ने याद

रखना है कि ये उसी शिब्बू के पोते हैं जो लोगों के कसीदे पढ़ता था और 'लाग' लेकर सौ-सौ आशीषें देता था।

प्रीतम सिंह : भूलने वाले बेशक भूल जाएं, पर याद रखने वाले तो याद रखेंगे ही। तू अब बातें करता है, अगर तेरे कोई लड़की-लड़का होता तो पता चलता कि सामने वाले कुछ भूलते हैं या नहीं।

पंडित : क्या मतलब ?

प्रीतम सिंह : अगर कोई बुरी हरकत करता तो लोगों ने कहना था, झींवरी का लड़का है, अगर पढ़ जाता तो कहा जाना था ब्राह्मण का लड़का है, जातियां भूलती थोड़े ही हैं।

पंडित : हां, ऊंची जातियों वाले कब भूलने देते हैं पर ये बातें सदा-सदा के लिए नहीं रहेंगी।

प्रीतम सिंह : ये हमेशा ही रहेंगी...भीलनी के जूठे बेर खाकर राम ने तो यश कमा लिया, पर भीलनी, भीलनी ही रही। बाबा नानक ने जब मलिक भागो के मालपूए से खून निचोड़ा और भाई लालो की सूखी रोटी से दूध निकाला तो लोगों ने कहा, अब मलिक भागो नहीं बचेंगे, पर लालो मिस्तरी अब भी सूखे काठ पर रंदा चलाते हैं और भागो अय्याशी करते हैं। दस्तूर नहीं बदलते, संस्कार नहीं बदलते, जातियां भी नहीं भूलतीं।

पंडित : तू देखना, जातियां भी बदलेंगी, पहले समाज सुधारकों ने केवल आदर्शों की बातें की, नीची जातियों के लिए कहा कि वे भी रब्ब के बंदे हैं, पर उनके काम नहीं बदले और छोटे काम करने वाले छोटे ही रहे, पर अब काम बदल गए हैं। शिब्बू का बिल्लू बलदेव सिंह माहला इसलिए बन सका क्योंकि वह इंस्पेक्टर लग गया है, पर शिब्बू लाख कोशिश के बावजूद नसीब सिंह माहला नहीं बन सका क्योंकि उसका काम चाकरी करना ही रहा। और इस पीढ़ी के बाद तू देखना, बिल्लू की अगली पीढ़ियां बदल जाएंगी। यह समाज की उथल-पुथल आज के वैज्ञानिक युग की देन है और शिब्बू इसकी जीती जागती मिसाल है... और...

प्रीतम सिंह : तूने तो पंडित लंबा चौड़ा भाषण झाड़ दिया... अपने पोते की पहली लोहड़ी है, मैंने शिब्बू को बुला भेजा है, मेजो को भी। देखते हैं, आते हैं कि नहीं, आएंगे तो कुछ कमा ले जाएंगे, न आएंगे तो लाग कोई और ले जाएगा, हमने तो देनी ही है।

पंडित : प्रीतम सिंह, तुम बड़े लोग अपनी चोंचलेबाजी नहीं छोड़ते, अपना बड़प्पन दिखाने के लिए कोई न कोई प्रपंच रचते ही रहते हो। अखंड पाठ रखा है, लड़के की नौकरी की मन्नत मांगी थी। पुत्तर की सगाई होनी है, पोते की लोहड़ी है, इसीलिए कि 'लागी' आएं सरदार-सरदारनियों को आशीष दें, इनके कसीदे पढ़ें और इनके अभिमान को चारा डालें।

(शिब्बू आता है।)

शिब्बू : सतश्री अकाल... मैं घर गया था...।

प्रीतम सिंह : क्यों, संदेशा मिल गया था?

शिब्बू : नहीं, संदेशा तो नहीं... मैं यह कार्ड-सा देने गया था।

प्रीतम सिंह : कैसा कार्ड?

शिब्बू : बात ये है सरदार जी, अपना बिल्लू जिद कर रहा है कि पापा का जन्मदिन मनाना है, इसलिए पापा के सारे दोस्तों को बुलाना है।

प्रीतम सिंह : जन्मदिन? शिब्बू, तुझे पता है तू कब पैदा हुआ था?

शिब्बू : मुझे तो नहीं पता था, पर बिल्लू ने पता लगा ही लिया।

पंडित : अरे वो कैसे? यह तो बड़ी अनोखी बात है।

शिब्बू : उसने बचपन में दादी से कहीं सुन रखा था कि माघ की संक्रांति के दूसरे दिन मैं पैदा हुआ था और साल वो था जब दूसरी बड़ी जंग लगी थी, सो उसने किताब में देखकर हिसाब लगा लिया कि आगामी इतवार को मैं पचास बरस का हो जाऊंगा। उसने कहा, छुट्टी वाला दिन है, पापा यारों दोस्तों के साथ बैठकर खा पी लेगा, सरदार जी आपने आना ज़रूर है।

(सरदार प्रीतम सिंह कार्ड को पलटकर देखता है, शिब्बू मटकता हुआ चला जाता है।)

प्रीतम सिंह : ओए पंडित, देख रहा है, क्या हो रहा है?

पंडित : हो वही रहा है जो होना चाहिए।

प्रीतम सिंह : पंडित, पढ़ तो क्या लिखा है।

पंडित : तू खुद ही पढ़ ले।

प्रीतम सिंह : नहीं, तू पढ़कर सुना।

पंडित : *(पढ़ता है)* दिनांक 14.1.1989 दिन इतवार, अपने पिता सरदार नसीब सिंह माहला का पचासवां जन्मदिन मनाने के लिए हम अपने नए घर 'माहला कुटीर' के प्रांगण में एक चाय पार्टी कर रहे हैं।

पापा जी के सभी मित्रों को निमंत्रण है। दर्शन देकर कृतार्थ करे।
निवेदक – बलदेव सिंह माहला।

प्रीतम सिंह : शिब्बू काणा, अब नसीब सिंह माहला हो गया है... हुंह, अब चींटियों के भी पर निकल आए हैं।

(पैर ज़मीन पर पटकता है और चला जाता है।)

पंडित : *(हंसता हुआ)* जीता रह बिल्लू पुत्तर, बड़े लोगों के अभिमान को यह तूने पहली ठोकर मारी है।

(हंसता हुआ चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(शिब्बू का घर- शिब्बू बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा है।)

बिल्लू : पापा, वह नहीं आएगा।

शिब्बू : आएगा क्यों नहीं ? मैं उसकी हर खुशी में शामिल होता रहा हूं, वो क्यों नहीं आएगा ?

(पंडित का प्रवेश)

पंडित : वो नहीं आएगा शिब्बू... नहीं भई, अब हम तुम्हें सरदार नसीब सिंह माहला कहेंगे।

शिब्बू : ओए पंडित, अब तू भी यारी नहीं निभाएगा ? गाली देकर बुलाएगा ?

पंडित : गाली ?

शिब्बू : हां, अगर तू मुझे सरदार नसीब सिंह माहला कहेगा, मुझे लगेगा कि तूने मुझे तीन गालियां निकाली हैं, एक सरदार कहकर, दूसरी नसीब सिंह कहकर, और तीसरी माहला कहकर। पर यह तो बता सरदार प्रीतम सिंह क्यों नहीं आएगा ?

पंडित : क्योंकि वह तेरा दोस्त नहीं है, यजमान है।

बिल्लू : चाचा, यही बात मैं पापा को समझाता रहा हूं।

पंडित : बिल्लू ठीक कहता है शिब्बू, जब कार्ड में लिखा है कि सारे दोस्तों से अनुरोध है कि दर्शन देकर कृतार्थ करें तो दोस्तों ने ही आना हुआ, अगर तुम लिख देते कि यजमान भी आएं तो वह आ जाता।

(शिब्बू कुछ सोचता है और बाहर जाता है।)

बिल्लू : चाचा, यही परखने के लिए तो पापा के जन्मदिन का कार्ड छपवाया था, अब तू आ गया, पापा का दोस्त।

पंडित : हमारी बात तो कुछ और है, हमने तो मुद्दत से इस जात-पात के आडंबर से मुक्ति पा ली है और सुखी हो गए हैं, सच तो यह है बिल्लू, कि आधे संकट तो संसार में इस कारण से पैदा हो गए हैं कि आदमी के नाम के साथ धर्म या जाति की पूंछ लगी हुई है।

मेजो : *(अंदर से आती हुई)* ओए पुत्तर, देख, तेरा पापा क्या कर रहा है, सारे कपड़े, कंबल, इकट्ठे करने में जुटा है जो पिछले सालों में प्रीतम सिंह के घर से मिले थे।

शिब्बू : *(कपड़ों का गट्ठर उठाकर आता है)* मैं तो फूंक दूंगा एक-एक करके, वो समझते क्या हैं अपने आपको, कहते हैं शिब्बू वैसे कसीदे नहीं पढ़ता जैसे लभू पढ़ता था। ओए कंजरो, अब तुम्हारा वो कसीदा पढ़ूंगा, जिसमें तुम्हारे पुरखों की झूठी शान नहीं होगी, बल्कि उनकी करतूतों की खाल उधेड़ूंगा- प्रीतम सिंह पुत्र नछत्तर सिंह, जो अफीम की स्मगलिंग करता है, नछत्तर सिंह पुत्र दर्शन सिंह, जिसने अपने भतीजे को ज़हर देकर अपने भाई की ज़मीन हथियाई। दर्शन सिंह पुत्र फूला सिंह, जो महाराजा रणजीत सिंह की फौज में घोड़ों की लीद उठाया करता था, फूला सिंह पुत्र गंडा सिंह, जो साथ के गांव की खत्रियों की लड़की को भगाकर लाया था, और लड़की के भाइयों ने सरेबाज़ार उसका सिर धड़ से अलग कर दिया था। ये जो बड़े बने फिरते हैं, एक-एक की सच्ची कलाम बनाऊंगा। ऊंची आवाज़ में बोलूंगा, हां, आज मेरा जन्मदिन है, पचासवां जन्मदिन, पचास सालों बाद आज नया जन्म लिया है।

(मेजो नए कपड़ों का जोड़ा लेकर आती है।)

शिब्बू : यह क्या है मेजो?

मेजो : बिल्लू के पापा, बिल्लू ने तेरे जन्मदिन के लिए नए कपड़े बनवाए हैं, टेरालीन के, ये धुल भी जल्दी जाते हैं और सूख भी जल्दी जाते हैं, मेरा काम आसान हो जाएगा।

(पंडित बिल्लू को आगोश में लेता है और खुशी के आंसू पोंछता है।)

शिब्बू : पंडित, आदमी अगर करने पर आ जाए तो ईश्वर के किए-धरे में भी दखल दे सकता है, सांसियों का शिब्बू अब सरदार नसीब सिंह हो गया है।